कक्षा

11

दर्शन शास्त्र

दर्शन शास्त्र

कक्षा 11

दर्शन शास्त्र

(कक्षा 11)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

पुस्तक – दर्शन शास्त्र

कक्षा–11

संयोजक – डॉ. निर्मल गर्ग
प्राचार्य
राजकीय कन्या महाविद्यालय
खैरवाडा (राज.)

लेखकगण –

1. डॉ. रेखा यादव
व्याख्याता– दर्शनशास्त्र,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

2. डॉ. मणिमाला शर्मा
व्याख्याता– दर्शनशास्त्र,
राज. कन्या महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर

3. डॉ. इरफान अहमद
व्याख्याता
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय,
कोटा

भूमिका

भारतीय वाड्.मय में सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा धार्मिक तत्त्वों के गूढ़तम रहस्य छिपे हुए हैं। हमारे ऋषियों, महर्षियों, आचार्यों की सद्वाणी से आप्लावित यह वाड्.मय भारत की धरोहर के रूप में जाना जाता है। इस साहित्य का लेखन आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व प्रारम्भ हो गया था। संस्कृत भाषा में वेद, आगम, उपनिषद् बाह्मण, अरण्यक आदि साहित्य का लेखन हुआ तथा प्राकृत भाषा में जैनागम, मूलसूत्र, व्याख्या साहित्य, शिलालेख, काव्य, नाटक आदि विधाएँ प्राप्त होती हैं। अतः यह कहना कोई अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का प्रयोग अतिप्राचीन काल से ही हमारे देश में होता रहा है।

भाषा–विकास–काल की दृष्टि से देखें तो विश्व की समस्त भाषाओं के भेदक्रम में भारतीय आर्यभाषा परिवार के अन्तर्गत संस्कृत एवं प्राकृत दोनों ही भाषाओं का अस्तित्त्व है। ईसा की छठी शताब्दी पूर्व से लेकर लगभग दसवीं/बारहवीं शताब्दी तक का समय प्राकृत भाषा एवं साहित्य के लेखन का काल माना जाता है। इस युग में प्राकृत साहित्य विविध विधाओं में लिखा गया। लेकिन इससे पहले से ही वैदिक काल तथा उससे भी पूर्व से लेकर प्राकृत भाषा का प्रयोग निरन्तर बोलचाल के रूप में होता रहा है। इसके प्रमाण हमें वेदों में प्राप्त होते हैं। ऐसी कोई भी विधा नहीं नहीं होगी, जिसमें प्राकृत साहित्य लिखा नहीं गया हो।

प्रस्तुत पुस्तक राजस्थान शिक्षा मण्डल, अजमेर के प्राकृत भाषा एवं साहित्य के 11 वीं कक्षा के छात्र–छात्राओं के लिए तैयार की गई है, जिसमें उन्हें प्राकृत भाषा, साहित्य, व्याकरण, वाक्य–बोध के प्रति मार्ग–दर्शन दिया गया है तथा स्वयं शिक्षक के रूप में भी यह पुस्तक उन्हें कारगर साबित होगी, हम ऐसी कामना करते हैं। प्राकृत भाषा एवं साहित्य का सामान्य परिचय छात्र–छात्राओं को हो सके, इसी उद्देश्य से यह पुस्तक तैयार की गई है।

– संयोजक एवं लेखकगण

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	खण्ड (अ)	
1.	नीतिशास्त्र का स्वरूप एवं क्षेत्र (i) परिभाषा (ii) नैतिक प्रत्यय (iii) मूल्य – साधन मूल्य एवं साध्य मूल्य	1 – 9
2.	भारतीय नीतिशास्त्र (i) आश्रम व्यवस्था, ऋण व्यवस्था एवं पुरुषार्थ चतुष्टय (ii) निष्काम कर्म एवं लोक संग्रह (iii) गांधी दर्शन – एकादश व्रत, सर्वोदय	10 – 18
3.	पाश्चात्य नीतिशास्त्र (i) सुकरात – ज्ञान एवं सद्‌गुण (ii) प्लेटो एवं अरस्तु – मुख्य सद्‌गुण एवं मध्यम मार्ग (iii) काण्ट – कर्तव्य के लिये कर्तव्य	19 – 26
4.	व्यक्ति और समाज (i) अधिकार एवं कर्तव्य (ii) संकल्प की स्वतन्त्रता एवं नैतिक उत्तरदायित्व (iii) दण्ड के सिद्धान्त	27 – 36
5.	पर्यावरण एवं नैतिकता (i) पर्यावरण की परिभाषा एवं स्वरूप (ii) मनुष्य एवं प्रकृति का सम्बन्ध (iii) व्यक्ति का पर्यावरण के प्रति दायित्व	37 – 44

खण्ड (ब)

6.	तर्कशास्त्र का स्वरूप एवं क्षेत्र (i) तर्कशास्त्र की परिभाषा (ii) सत्यता एवं वैधता, भाषा के तीन कार्य (iii) परिभाषा का स्वरूप एवं इसके नियम	45 – 50
7.	पद एवं तर्क वाक्य (i) पद एवं तर्कवाक्यों की परिभाषा एवं वर्गीकरण (ii) पद व्याप्ति, व्याप्त्यर्थ एवं गुणार्थ की परिभाषा (iii) तर्कवाक्यों के बीच सम्बन्ध, प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र, आधारभूत सत्यता सारणियां	51 – 58
8.	विज्ञान एवं प्राक्कल्पना (i) विज्ञान एवं प्राक्कल्पना की परिभाषा (ii) वैज्ञानिक प्राक्कल्पना का स्वरूप, प्रकार एवं उपयोगिता (iii) वैज्ञानिक प्राक्कल्पना का मूल्यांकन	59 – 64
9.	मिल की विधियाँ (i) अन्वय एवं व्यतिरेक प्रणाली (ii) अन्वय–व्यतिरेक संयुक्त प्रणाली (iii) अवशेष एवं सहचार प्रणाली	65 – 72
10.	भारतीय तर्कशास्त्र (i) प्रत्यक्ष एवं अनुमान प्रमाण (ii) पंचावयव अनुमान एवं निर्दोष व्याप्ति (iii) शब्द प्रमाण	73 – 79
संदर्भ एवं सहायक ग्रन्थ		80 – 81